शोध मंथन Vol. XI No.II Apr.-June. 2020 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 7.760 (SJIF)

'तुलसीकृत ''रामचरित मानस'' में लोक इच्छा की सर्वोच्चता'

डॉ. सुनीता शर्मा
ऐसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
पी.सी.एम.एस.डी. कालेज फॉर वूमैन,
जालन्धर शहर
ईमेल:Emadrsunitasharma.26@gmail.com

सारांश

तुलसीदास कृत रामचरितमानस भक्ति काव्य परम्परा कालजयी रचना है। अवधी भाषा में लिखित यह महाकाव्य अपने पूर्ववर्ती एवं परवर्ती भक्तिकाल की अद्वितीय रचना है। जिसमें जीवन के सभी क्षेत्रों से सम्बद्ध सूत्र मिलते है। जिनके प्रभाव स्वरूप ही तुलसीदास कही भक्त, कहीं कवि, तो कही उपदेशक के रूप में आते है। तुलसीदास अपने समय के सभी नीतिपरक कवियों से आगे माने जाते है। जिन्होंने समाज, धर्म, राजनीति, प्रकृति आदि विषयों से सम्बन्धित सूक्तियां एवं सूत्र दिए है। जो मध्यकाल से लेकर आज तक प्रत्येक युग अनुरूप रामचरितमानस की प्रांसगिकता सिद्ध करते है।

प्रस्तावना

संत कबीर दास कहते है– सोच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप' जाके हिद पै सोच है ताके हिरदे आप।'' परमात्मा उसी मानव के हृदय में निवास करते है जिनके हृदय में सत्य रहता है। हमें गुरू नानक देव जी के उस बात से प्रेरणा लेनी चाहिए जिसमें उन्होंने भी कहा है–''वेद कतेब कहहु, मत झूठे, भ्रूण जोन विचारे।'' उनके अनुसार '' विद्या विचारी तो पर उपकारी'– विद्या पर विचार करो। विचार और आचार दोनों का परस्पर सम्बन्ध है तभी विद्या परोपकारी बन सकती है एवं अन्य संत कहते है–

'' बिना विचारे जो करे सो पाछे पछिताप।
काम बिगाड़े आपनो जग में होत हंसाय।''

इन विद्वानों की इस अर्थ युक्त वाणी के बाद हमें यही प्रेरणा मिलती है कि कुछ भी बोलने या करने से पहले विचार किए जाने की अत्यधिक आवश्कता है अथवा क्रिया सिद्ध होती है। जो बिना विचार किए कार्य करता है उसकी समाज में हंसाई भी होती है कार्य भी ठीक से नहीं हो पाता। गोस्वामी तुलसीदास कृत 'राम चरित मानस' की व्याख्या 'बाल्मीकि रामायण' के आधार पर ही है, उसी का अवधीकरण हुआ है। समाज में 'ढोल गंवार शूद्र पशु नारी सकल ताड़ना के अधिकारी' इसी चौपाई का अधिकतर लोगों ने इसका अर्थ गलत किया जाता है। यहीं नहीं बात समाप्त होती कई बार लोगों के सामने इसके मूलभाव के विपरीत उद्धृत भी किया जाता

है। यह भी कहा जाता है कि नारी को गोस्वामी तुलसीदास ने ढोल (एक वाद्य यंत्र) गंवार (गांव में रहने वाले/ सूद्र/ अल्पज्ञ/ पशु/ पालतु तथा जंगली जानवर) की कोटि में रख दिया है और उन्होंने नारी को दण्ड का अधिकारी भी कहा है। यह नारी वे असम्मान की बात है। यदि गोस्वामी तुलसीदास जी ने सही ऐसा कहा है तो उक्त विद्वत वर्ग की चिन्ता स्वाभाविक है तथा उनकी आलोचनों का लोगों द्वारा सम्मान करना चाहिए। यदि ऐसा वास्तव में नहीं है तो मानना चाहिए कि झूठ को पाप कहा गया है।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने ढोल गंवार, सूद्र, पशु और नारी को नीचा तथा दण्डनीय समझते है तो उसका वर्णन 'वाल्मीकि' रामायण' में भी मिलता है पर ऐसा उल्लेख नहीं है वहां पर केवल श्री राम चन्द्र और समुन्द्र के बीच की वार्तालाप है। सभी राम जी सहायता में लगे हुए है। उनमें वानर, भालू, गीध आदि श्री राम का सहयोग दे रहे है। राम उन सब की सेवाओं और कार्यो से अत्यधिक प्रसन्न थे। उन्हें तो अप्रसन्नता तो सागर से ही गयी थी, जो उन्हें मार्ग देने में सहायता नहीं कर रहा था। सागर की उस अभिमान भरी जड़ता को समाप्त करने के लिए जब राम जी ने ब्रहमशास्त्र शरसंधान किया, तभी सागर ने सशरीर प्रस्तुत होकर अपने ऊपर सेतु बांधने के लिए नल–नील नाम के वरदानी वानर का नाम सुझाया। नल ने सभी वानरों की सहायता से पांच दिन में सौ योजन का पुल रामेश्वरम से लंका के बीच बांध दिया था। गोस्वामी तुलसीदास जी ने जिन्होंने अपने महाकाव्य में कही भी नारी को अनावश्यक दण्डनीय नहीं माना, वे नारी के इतना विरूद्ध होकर भला इतनी असम्बद्ध पंक्ति को क्यों लिखेंगे, जो किसी भी नारी के अनर्थ कारी हो ? विदुषी नारियां गोस्वामी जी के सूक्ष्मता से भरे अर्थ से सुपरिचित है। वे गोस्वामी जिन्होंने सरस्वती को, गणेश से भवानी को शंकर से, सीता को राम से पहले रखते हुए स्तुति की है। वे गोस्वामी जो स्वयं अपनी पत्नी की शिक्षा का शिरोधार्य का इतना बड़े महान् विद्वान बने है। जिन्होंने शबरी के प्रेम से इतना उभारा हो कि जिन्होने केवल और गीध के प्रसंग का सजीव चित्रण किया है। वे कैसे नारी तथा पिछड़ों की अस्मिता से अपने अमर महाकाव्य की एक पंक्ति में खिलवाड़ करेंगे। राम के लिए वनवास मांगने वाली माता कैकयी के प्रति उनका वही सम्मान रहा है, जो कौशल्या और सुमित्रा के प्रति रहा है। मन्थरा नाम की दासी से भी उनके प्रति राम जी मन में दुर्भाव नहीं आए। राम जी ने जब बाली को वाण से धराशायी कर दिया तभी बाली ने श्री राम से प्रश्न किया–

''मैं बैरी सुग्रीव पियारा
कारण कौन नाथ मोहि मारा।''

अर्थात हे राम क्या कारण था आपने मुझे मार दिया और सुग्रीव से इतना प्रेम करते हो? इस बात का उदाहरण देते हुए श्री राम जी ने कहा –

''अनुज बधू भगिनी सुत नारी सुन सठके कन्या समचारी।
इन्हहि कुदृष्टि विलो कह जोई ताहि बधे कछु पापन होई।

अर्थात छोटे भाई की पत्नी, बहन बेटे की पत्नी ये सभी कन्या के समान है इन सभी पर कामुकता भरी दृष्टि रखने वाला है। वह मृत्युदण्ड का अधिकारी होता है। राम जी कहते है

कि यदि तुमने बाली भाई सुग्रीव की पत्नी को बंधक बना लिया, उनसे अपनी पत्नी बनाने को कहा इसलिए हमने तुम्हारा बंध कर दिया। इस वार्ता से इतना ज्ञान प्राप्त होता है कि नारी का सदा सम्मान हुआ है तथा नारी की अस्मिता से खिलवाड़ करने वाले को दण्ड मिलना ही चाहिए, इसी प्रकार जयन्त भी श्री राम के द्वारा दंडित हुआ है। 'ताड़ना' शब्द के अर्थ के अच्छी तरह समझ लेना। जान लेना अच्छा है। ताड़ना' शब्द का अर्थ अवधी भाषा में– विशेष ध्यान देना या विशेष तौर से समझ लेना होता है। जब 'प्र' उपसर्ग जुड़ जाता है तब शब्द प्रताड़ता बनता है जिसका अर्थ डांटना, फटकारणा या मारना हो जाता है, सकल ताड़ना के अधिकारी का अर्थ सभी विशेष ध्यान देने योग्य पात्र है। ढोल हो, गंवार हो शूद्र हो पशु हो या नारी हो इन सभी पर विशेष ध्यान दीजिए वे सभी विशेष ध्यान और प्रेम के अधिकारी है। इन सभी की मर्यादाओं अर्थात् सीमाओं को ताड़ लेने से सफलता पाई जा सकती है पर इन्हें प्रताड़ित करने से तो सफलता की कल्पना करना भी कठिन है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने 'रामचरितमानस' को अवधी भाषा में लिखा है। जिसके अनेक शब्द भारत की अन्याय प्रांतीय भाषाओं से बोले जाते है। इस भाषा की लिपि देवनागरी है। ढोल या उस जैसा चमड़े से बना वाद्य यंत्र अनाड़ी व्यक्ति के हाथों में कामयाबी नहीं है। उसकी मर्यादा को तो उसका ज्ञाता ही समझ सकता है। गंवार और शहरी का अन्तर उस समय भी था और आज भी है। गंवार की मर्यादा से अपरिचित मानव गांव के व्यक्ति की मुश्किलों से परिचित न होते हुए उनके मनोभावों को ताड़ नहीं पाता। शूद्र अल्पज्ञ को कहते है। अल्पज्ञ का अर्थ यह नहीं है कि शूद्र का कार्य अल्प उपादेय है। अस्पताल में चिकित्सा का ज्ञाता चिकित्सक तो है पर यदि वहां रख–रखाव करने वाला कोई कर्मचारी नहीं है, तो भी रोगी वहां नहीं रह सकता। उनकी चिकित्सा की जानी सम्भव नहीं है। अलग–अलग तरह के वन्य पशु है– बैल, घोड़े, हाथी आदि जो आधुनिक समय तक मानवीय शान–शौकत के अंग बन कर रह रहे है। इनको पालना परिवारों में बहादुरी नहीं है। अपितु इनके निकटतम स्वामी ही इनकी आवश्यकताओं को ताड़ सकते थे, और इनसे काम ले सकते थे। नारी–पुरूष से अधिक संवेदनशील तथा अपनी मर्यादाओं के प्रति जागरूक वर्ग है। नारी के साथ व्यवहार करने वाले को नारी की मर्यादाओं को ताड़ लेने की क्षमता होनी चाहिए तभी नारी लाभान्वित हो सकती है तथा एक विश्वास भरा सुकून प्राप्त कर सकती है।

सागर ने भी श्री राम चन्द्र जी को कहा आप मर्यादा पुरूषोत्तम है और हम सभी की अपनी–अपनी मर्यादाऐं होती है, जिनको समझकर ही व्यवहार किया जाना चाहिए। इसी प्रकार सागर प्रकृति के प्रति तथा सीमा पर रखे लोगों व नारी की मर्यादाओं की रक्षा करने के प्रति, उनके मनोभावों को पढ़ लेने तथा उनके अनुकूल व्यवहार करने की और भगवान राम से प्रार्थना करता है। सागर केवल अपनी ओर नहीं अपितु समस्त उपेक्षित वर्ग की ओर संकेत भी कर रहा है। ढोल प्रकृति का प्रतीक है। हमारे अमर्यादित व्यवहार के कारण वन और नदियों आज किस स्थिति में पहुंच चुकी है। शूद्र वे है जिन्हें पुरूषार्थ दिखाने को कम से कम अवसर प्राप्त हुआ था सुसंगत से वे वंचित है। वे भी मानव है। पशु एक बेजवान जीव है। पर प्रेम की भाषा वह भी समझता है। शारीरिक दृष्टि से नारी और पुरूष में अन्तर है। किन्तु बौद्धिक दृष्टि से नहीं। वह मां बनती

है। नारी अपने बच्चों पर ममता की छाया अत्यधिक करती है। किसी ने भी क्या नारी की ममता के स्त्रोत के उद्‌गम की शक्ति को अनुभव किया है। यह वास्तविकता है कि कभी–कभी नर नारी की ममता, उदारता और सौम्यता का दुरूपयोग करता हुआ उसके साथ अन्याय करने लगता है। बौद्धिक दृष्टि से नारी और पुरूष में कोई अन्तर नहीं है। वे न जाने अपने साथ हुई ज्यादती का कितना जहर अपने गले में ही नीलकंठ शिव की तरह स्थिर रखकर जीवन जी रही है। तड़ना या ताड़ना का अर्थ यदि हमने प्रताड़ना से लगा दिया तब तो हीरे को हम सदैव, मिट्‌टी समझते रहेंगे और अर्थ का अनर्थ करते ही रहेंगे। एक आदर्श और मर्यादित जीवन से जुड़ी सारी कथा हमारे जीवन को कोई दिशा नहीं दे सकेगी। सागर ने सारी चिन्ताचर, अचर, चेतन–अवचेतन, सभी की सुरक्षा और संरक्षणा के लिए की है। तभी सभी का व्यवहार लोक हित में हो। इस प्रकार से गोस्वामी तुलसीदास और बाल्मीकि जी ने अपने महाकाव्य लिखकर भ्रष्ट जनता को सही राह दिखाने का भरपूर प्रयास किया है।

महाकवि तुलसीदास को रामकाव्य को प्रौढ़ता पर पहुंचाने का श्रेय जाता है। इन्होंने श्री राम के शील सौन्दर्य युक्त रूप को लेकर आदर्श एवं मर्यादा की भावभूमि पर राम–सगुण–भक्ति काव्य की रचना की है जो हिन्दी साहित्य में अपनी लोकप्रियता में बेजोड़ है। तुलसीदास राम भक्ति काव्य के प्रणेयता के रूप से अपना प्रथम स्थान ग्रहण किए हुए है।

डॉ. रामकुमार वर्मा के कथानुसार– 'तुलसीदास ही राम साहित्य के सम्राट है इन्होंने राम के चरित्र का आधार लेकर मानव जीवन की जितनी व्यापक और सम्पूर्ण समीक्षा की है उतनी हिन्दी साहित्य के किसी कवि ने नहीं की। इस समीक्षा के साथ ही इन्होंने लोक शिक्षा का भी ध्यान रखा और मानव जीवन में ऐसे आदर्शों की स्थापना की जो विश्वजनित है और समय के प्रवाह से नहीं बह सकते है। ' इस प्रकार तुलसीदास अपने आदर्शों के माध्यम से भक्ति की इतनी सुन्दर व्याख्या की कि वह तत्कालीन धार्मिक अव्यवस्था में मार्ग–दर्शन के रूप में समाज के समक्ष आयी। तुलसी के काव्य की लोक व्यापी प्रसिद्धि का कारण बताते है। इस प्रकार से रामचरित मानस तुलसीदास की प्रतिनिधि काव्य है और साथ ही मानवता की शिक्षा का विश्वकोष है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. तुलसीदासकृत *रामचरित मानस,* गीता प्रैस, गोरखपुर, : सः 2029 पृ0 **645**
2. तुलसीदासकृत *रामचरित मानस* गीता प्रैस, गोरखपुर : सम्वत् 2029 पृ0 **591**
3. तुलसीदासकृत मूल्यांकन, पृ0 **87**
4. सुधाकर पाण्डेय, *रामचरित मानस,* : साहित्यिक मूल्यांकन पृ0**164**